COURSE NAME –M.Ed IV SEMESTER
SUBJECT NAME = EDUCATION TECHNOLOGY & ICT (SC-5)

COMMUNICATION AND MODIFICATION OF TEACHER BEHAVIOUR
(शिक्षक व्यवहार का संचार और संशोधन)

Meaning and components of communication process
संचार प्रक्रिया के अर्थ एवं घटक :-

सम्प्रेषण का अर्थ है परस्पर सूचनाओं तथा विचारों का आदान-प्रदान करना। शिक्षा और शिक्षण, बिना सूचनाओं तथा विचारों के आदान-प्रदान के सम्भव ही नहीं है। शिक्षक होने के नाते आप अपने प्रधानाचार्य से अथवा छात्रों से कुछ कहते हैं या छात्र आपको कुछ बताते हैं, प्रत्युत्तर देते हैं या प्रधानाचार्य बुलाकर आपको आदेश देते हैं, प्रशंसा या आलोचना करते हैं। इसका तात्पर्य है कि सम्प्रेषण की प्रक्रिया चल रही है। जब बच्चे एक-दूसरे का हाथ पकड़कर परस्पर कानों में फुसफुसाते हैं (बहुत धीरे-धीरे बोलते हैं) तब भी सम्प्रेषण की प्रक्रिया चल रही होती है। एक अच्छा भाषणकर्ता सदैव अपने हाव-भाव, मुख मुद्रा तथा मुख-भंगिमाओं का प्रयोग अपने श्रोताओं को प्रभावित करने के लिए करता है।

सम्प्रेषण, प्रेषण करने की, विचार-विनिमय करने की, अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने की और दूसरों की बातें सुनने की, विचारों, अभिवृत्तियों, संवेदनाओं तथा सूचनाओं एवं ज्ञान के विनिमय करने की एक प्रक्रिया है।

एन्डरसन के अनुसार, "सम्प्रेषण एक गत्यात्मक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति चेतनतया अथवा अचेतनतया, दूसरों के संज्ञानात्मक ढाँचे को सांकेतिक (हाव-भाव आदि) रूप में, उपकरणों या साधनों द्वारा प्रभावित करता है।"

सम्प्रेषण की परिभाषा देते हुये लीगेन्स कहते हैं, "सम्प्रेषण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा दो या दो से अधिक लोग विचारों, तथ्यों, भावनाओं तथा प्रभावों आदि का इस प्रकार (परस्पर) विनिमय करते हैं कि सभी लोग प्राप्त संदेशों को समझ जाते हैं। सम्प्रेषण में संदेश देने वाले तथा संदेश ग्रहण करने वाले के मध्य संदेशों के माध्यम से समन्वय स्थापित किया जाता है।"

लूगीस एवं वीगल के अनुसार "सम्प्रेषण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत सूचनाओं, निर्देशों तथा निर्णयों द्वारा लोगों के विचारों, मतों तथा अभिवृत्तियों में परिवर्तन लाया जाता है।"

एडगर डेले (Edgar Dale) के अनुसार, "Communication is the sharing of ideas and feelings in a mood of mutuality." सम्प्रेषण विचार-विनिमय के मूड (Mood) में विचारों तथा भावनाओं को परस्पर जानने तथा समझने की प्रक्रिया है।

सम्प्रेषण की तीन सरल किन्तु महत्त्वपूर्ण परिभाषायें नीचे उद्धृत की जा रही हैं-

1. "Communication is the process by which an idea is transferred from a source to a receiver with the intention of changing his behaviour."
2. "It is a mutual exchange of facts, thought or perceptions leading to a common understanding of all parties. It does not necessarily imply agreement."
3. "Communication is the transfer of information from the sender to the receiver with the information being understood by the receiver."

communication process (संचार की प्रक्रिया) :-

सम्प्रेषण एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मानवीय सम्बन्ध स्थापित होते हैं, दृढ़ होते हैं तथा विकसित होते हैं। सम्प्रेषण की प्रक्रिया, सामाजिक संरचना में ऐसे गुथे हुए हैं कि बिना सम्प्रेषण के सामाजिक जीवन की कल्पना करना ही मुश्किल होता है।

सम्प्रेषण की प्रक्रिया को सरल मॉडल के रूप में नीचे प्रदर्शित किया जा रहा है–

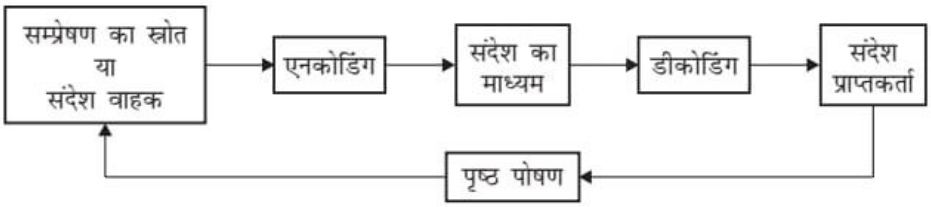

सम्प्रेषण की प्रक्रिया को एक अन्य लोकप्रिय मॉडल द्वारा नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है–

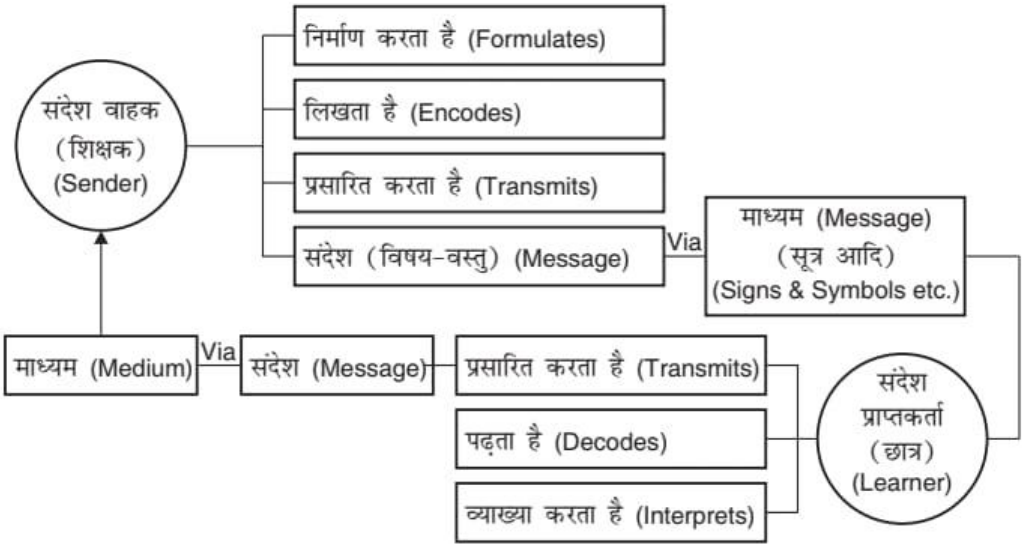

communication components (संचार के घटक) :-

सम्प्रेषण प्रक्रिया में निम्नलिखित तत्वों का होना आवश्यक होता है -

1. **सम्प्रेषण संदर्भ (communication Context)**
   - **(I) भौतिक संदर्भ**
   - **(II) सामाजिक संदर्भ**
   - **(III) मनोवैग्यनिक संदर्भ**
2. **संदेश का श्रोत (Source)**
3. **संदेश (Message)**
4. **सम्प्रेषण का माध्यम (Channel)**
5. **संकेत या प्रतीक (Symbol)**
6. **इनकोडिंग (Encoding)**
7. **डिकोडिंग (Decoding)**
8. **पृष्ठपोषण (Feedback)**
9. **सन्देश ग्रहणकर्ता (Receiver)**

Skills and methods of effective communication

कौशल और प्रभावी संचार की विधि :-

प्रभावी संचार की विधि :-

संचार को तभी प्रभावी माना जाता है जब वह दूसरे व्यक्ति को प्रभवित करता है तथा वे सभी उद्द्येश्य प्राप्त करता है जिनके लिये संचार किया जाता है । मौखिक या लिखित रुप से प्रभावी संचार करना एक अत्यंत जरुरी कौशल है । एक संचार को प्रभावशाली होने के लिये आवश्यक है कि वह स्पष्ट हो संक्षेप में हो तथा अर्थपूर्ण हो ।

Model for Effective Communication

प्रभावी संचार का मॉडल :-

वर्धमान एवम वर्धमान के अनुसार - प्रभावपूर्ण संचार का आधार अंग्रेजी वर्णमाला के पौच अक्षरो(PRIDE) द्वारा व्यक्त किया जा सकता है -

1. संचार का उद्द्येश्य (Purpose of communication)
2. प्राप्तकर्ता की भूमिका (Recever'sRole)
3. वांछित प्रभाव (Impact Desired)
4. संचार की रुपरेखा (Design of the Communication)
5. संचार का क्रियांवयन (Execution of the communication)

संचार को कार्यकुशल बनाने के लिये निम्नलिखित तत्वो पर ध्यान देना आवश्यक है :

1. स्पष्ट,संक्षिप्त एवं परिपूर्ण कथन
2. शिष्टता व शालीनता
3. आदर्श व्यवहार
4. सहयोग
5. समुचित सम्प्रेषण विधि
6. सम्प्रेषण निरंतर हो
7. उचित समय पर संदेश
8. सम्प्रेषण की पुष्टि

प्रभावी संचार के कौशल :-

1. एक सक्रिय श्रोता बने
2. व्यवधान और नकारात्मक प्रश्नो से बचे
3. समझने का लछ्य रखने की अवधारणा
4. सम्वेदनशील रहे और तकनीकी मतभेदो को स्वीकारे
5. अर्थ की गलत व्याख्या करने से बचे
6. प्रतिपुष्टि ले
7. आरामदायक होने से बचे
8. प्रभावी संचार के लिये विश्राम ले